International Journal of Sanskrit Research 2017; 7(4): 272-274

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 7(4): 272-274
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-05-2021
Accepted: 16-06-2021

दीपक कालिया
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातः)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
दीपक कालिया
ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (प्रातः)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वर्तमान युग में वेदान्त की उपयोगिता

दीपक कालिया

प्रस्तावना

वर्तमान वैज्ञानिक युग में मानव जीवन पूर्णतया यन्त्रों में निर्भर हो गया है। आज के इस युग में मनुश्य आत्मकेन्द्रित होकर केवल स्वार्थपूर्ति के लिए ही कार्य कर रहे है। अपने प्रयोजन की सिद्धि एवं लक्ष्य की पूर्ति के लिए वर्तमान समय में मनुश्य कुछ भी कार्य करने से नहीं हिचकिचाता क्योंकि उसका मुख्य लक्ष्य तो धन कमाना ही हो गया है। मानव की इस धनलोलुपता का यह परिणाम हुआ कि समाज में अनेक प्रकार के दुर्गुण उत्पन्न हो गए। जैसे कि परस्पर पारिवारिक संबंधों में विच्छेद। पिता–पुत्र, भाई–भाई और पति–पत्नी में जैसा सौहार्दपूर्ण संबंध होना चाहिए वैसा अब कहीं भी दिखाई नहीं देता। इसके कारण सबकी मानसिक स्थिति भी विकृत हो गई है। मनुश्य आर्थिक दृश्टि से और भौतिक साधनों से चाहे कितना भी सम्पन्न हो गया हो परन्तु मानसिक शान्ति से विहीन वह जीवन के परमसुख को प्राप्त नहीं कर रहा है। आज के युग में न केवल सामाजिक स्थिति अपितु देष की राजनैतिक दषा भी बहुत शोचनीय हो गई है। प्रजा के रक्षक नेता लोग प्रजा भक्षक हो गए है। शासन वर्ग सत्ता की चाह में निम्नातिनिम्न कार्य करते हुए भी नहीं लजाते। प्रजा के धन को हड़प कर वे अपने सुख साधनों को जुटा रहे हैं। परस्पर विवाद करने वाले राजनेताओं ने राजनीति को युद्ध का अखाड़ा बना दिया है। इस प्रकार वर्तमानयुग में नैतिक पतन चरम सीमा पर पहुंच गया है। सत्य क्या होता है? विनम्रता क्या है? सदाचारी कैसा होता है? ये सब विशय तो केवल पुस्तकों तक ही सीमित रह गए हैं व्यवहार में इनका प्रयोग कहीं भी दिखाई नहीं देता। यद्यपि धर्म कर्म के प्रचार के लिए वर्तमान युग में अनेक प्रवचनों सत्संगों का आयोजन हो रहा है परन्तु यह सब प्रदर्षन भाव ही है। इन आयोजनों में जाकर कितनी आत्मषान्ति या ज्ञान प्राप्त होता है? यह कोई भी नहीं जानता। स्वयं प्रवचनकर्ता भी इस विशय से अनभिज्ञ है। वस्तुतः कलियुग के प्रभाव से तो साधु सन्यासी भी प्रभावित हैं क्योंकि वे भी धन और यष के लिए आपस में लड़ते झगड़ते हैं इस प्रकार वर्तमान युग में जिस प्रकार के व्यवहार व आचरण की अपेक्षा है वैसा व्यवहार व आचरण मनुश्यों में दिखाई नही देता। वर्तमान समय की इस चिन्ताजनक स्थिति को देखते हुए केवल एक ही उपाय सर्वाधिक उचित प्रतीत होता है और वह है "वेदान्त का ज्ञान"। वेदान्त के माध्यम से ही हम सभी समस्याओं का उन्मूलन कर सकते है जिससे कि प्रत्येक प्राणी सुखी हो जाए इसमें "वेदान्त की सर्वाधिक लाभप्रद भूमिका इसलिए होगी क्योंकि वेदान्त के ज्ञान से मनुश्यों में अवष्य ही मानवता का प्रादुर्भाव होगा।

"वेदान्त शब्द का शाब्दिक अर्थ है– "वेदानाम् अन्तः इति वेदान्तः" अर्थात् वेदों का अन्तिम भाग। वस्तुतः वैदिक साहित्य में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक व उपनिशद् है। उपनिशद् ही वेदान्त नाम से जाने गए हैं। इसे स्पश्ट करते हुए "वेदान्तसार" नामक अपने ग्रन्थ में श्री सदानन्द में लिखा है कि– "वेदान्तो नामोपनिशत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरकसूत्रादीनि च।" अर्थात् प्रमारूपा ब्रह्मविद्या के प्रमाणरूप उपनिशद् ही वेदान्त है और उनके अर्थ का अनुवर्तन करने वाले ब्रह्मसूत्र भी वेदान्त हैं। इस प्रकार मुख्यरूप से वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिशदों के लिए किया जाता है और उपचार रूप से ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवत् गीता के लिए भी है। 'उपनिशद्' इस शब्द का प्रयोग तो ब्रह्मविद्या या आत्मविद्या के लिए होता है परन्तु इस विद्या के प्रमाणभूत ग्रन्थ भी गौणीवृत्ति से उपनिशद् कहे जाते हैं। इस प्रकार प्रमारूपा ब्रह्मविद्या और प्रमाणरूपा उपनिशद् ग्रन्थ दोनों ही 'वेदान्त' इस शब्द से जाने जाते हैं। सरल शब्दों में हम कह सकते है कि ब्रह्मज्ञान सम्बन्धी जो भी ग्रन्थ हैं ये सभी वेदान्त ही हैं।

वेदान्त–सिद्धान्त

उपनिशदों के सिद्धान्त ही वेदान्त के सिद्धान्त है। कुछ लोगों का मत है कि वेदान्त ज्ञान षुश्क ज्ञान है क्योंकि इसके ज्ञान से मनुश्य समाज से पृथक होकर अकेला हो जाता है तथा वेदान्त ज्ञान से मन की शान्ति तो मिल सकती है परन्तु उदरषान्ति नहीं अर्थात् इसके ज्ञान से धनोपार्जन संभव नहीं। परन्तु ये सारी मान्यताएं भ्रामक हैं। वास्तव में जो वेदान्त को सम्यक् रूप से नहीं जानते ये ही ऐसा कहते हैं।

वेदान्त मे ंतो ऐसे ऐसे सद्विचार हैं कि जिनके पालन से मानव जीवन प्रत्येक दृश्टि से सुखी हो जाए। सभी उपनिशदों में गुरू–षिश्य के संवाद के रूप में वर्णित उपदेष अत्यनत उपयोगी हैं। जैसे–

कठोपनिशद् का यम और नचिकेता का संवाद सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक दृश्टि से आज के युग में विषेश रूप से महत्वपूर्ण है। नचिकेता जब देखता है कि उसके पिता वाजश्रवा बूढ़ी कमजोर गायों को दान में दे रहा है तब वह पितृभक्ति के कारण और बालसुलभ–चपलता से पूछता है कि हे पिता! मुझे किसको प्रदान करोगे? नचिकेता का यह प्रष्न युक्तिसंगत ही था क्योंकि विष्वजित् यज्ञ में तो सर्वस्व दान का विधान है। नचिकेता के बार–बार वही प्रष्न करने पर पिता क्रोधित हो गए और कहने लगे कि मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूँ। ऐसा सुनकर नचिकेता पिता की आज्ञा का पालन करते हुए यम के द्वार पर चला गया। इस प्रसंग से यह ज्ञात होता है कि पिता की आज्ञापालन ही पुत्र का प्रथम कर्तव्य है। यदि वर्तमान युग में भी वह आदर्ष सभी अपनाएं तो पिता और पुत्र के सम्बन्ध अवष्य ही मधुर हो जाएँगे। आज की युवा पीढ़ी के लिए यह पालनीय है। नचिकेता जब यमलोक पहुंचा तब यमराज वहां नहीं थे। निराहार एवं निर्जल रहकर नचिकेता ने यम के द्वार पर तीन दिन तक यम की प्रतीक्षा की। तीन दिनों के पश्चात् जब यम लौटे तो उन्होंने द्वार पर अतिथि नचिकेता को निराहार निर्जल रहकर प्रतीक्षा करते देखा तो उन्हें पश्चाताप हुआ क्योंकि अतिथि की कभी भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, ऐसी मान्यता है। यमराज कहते हैं–

> आषा प्रतीक्षे संगतसुनृतां च, इश्टापूर्ति पुत्रपषूनष्च सर्वान्
> एतत् वृङक्ते पुरूशस्याल्पमेधसो यस्यानष्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे (कठोपनिशद 1/8)

अर्थात् जिसके घर पर ब्राह्मण–अतिथि बिना भोजनादि किए निवास करता है, उस मन्दबुद्धि पुरूश की ज्ञात और अज्ञात वस्तुओं की प्राप्ति की इच्छाएं, उनके संयोग से प्राप्त होने वाले फल, प्रिय वाणी से प्राप्त होने वाले फल यज्ञादि इश्ट एवं उद्यान कूप बावड़ी निर्माण आदि पूर्वकर्मों के फल तथा पुत्र पषु आदि को वह नश्ट कर देता है।

इसलिए 'अतिथि देवो भव' इसका अनुसरण करते हुए यमराज के द्वारा प्रायष्चित के रूप में नचिकेता को तीन वर दिए। उन्होंने कहा कि तीन रात्री जो मेरे घर में बिना कुछ खाए रहे इसलिए एक–एक रात्री के लिए तीन वर मांग लो। ऐसी अतिथि सेवा यदि वर्तमान युग में लोग करने लगे तो समाज और परिवार में अवष्य ही सौहार्दपूर्ण वातावरण हो जाएगा। आपस में मधुर सम्बन्ध होने से लोग ईर्श्या द्वेश रहित होकर अच्छे–अच्छे कार्य ही करेंगे।

नचिकेता के द्वारा जो पहला वर मांगा गया वह पिता के परितोश के लिए था क्योंकि जब वह पिता के सत्य की रक्षा के लिए यमलोक गया तब उसका पिता वाजश्रवा उस पर बहुत कुपित था। उनका क्रोध शान्त करने के लिए ही उसने यह वर मांगा–

> शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माऽभिमृत्यो।
> त्वत्प्रसृश्टं माऽभिवदेत् प्रतीत एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे।। (कठोपनिशद 1/1/10)

अर्थात् हे यमाचार्य मेरे पिता उद्यालक (वाजश्रवा) मेरे प्रति पहले की तरह शान्तचित्त एवं शान्त विचारों वाले प्रसन्न मन वाले व क्रोध रहित हो जाए तथा आपके द्वारा भेजे गए मुझे देखकर पहचान कर कि वह मेरा वही पुत्र नचिकेता है जिसको मैंने मृत्यु के समीप भेजा था, बोले और मुझसे बातचीत करे।

वस्तुतः यदि हमारे कारण किसी व्यक्ति को दुःख हो तो जब तक हम उस दुःख की निवृत्ति न कर दें हमें आत्मषान्ति नहीं मिलेगी। ऐसा सभी लोग मानते हैं। इसलिए पिता की प्रसन्नता ही नचिकेता को अभीष्ट थी। नचिकेता के समान यदि आधुनिक युग में भी पुत्र स्वार्थ को त्याग कर माता–पिता को सुख व शान्ति प्रदान करने वाले आचरण व व्यवहार का पालन करें तो विच्छिन्न हुए पारिवारिक सम्बन्ध फिर से मधुर हो सकते हैं।

लौकिक सुख के पश्चात् मनुश्य को पारलौकिक सुख की इच्छा होना स्वभाविक ही है। यह पारलौकिक सुख की इच्छा ऐहिक सुख की इच्छा से प्रबल होती है। इसलिए नचिकेता ने अपने लिए नहीं अपितु जन सामान्य के लिए स्वर्गलोक की प्राप्ति के साधन रूप अग्नि विज्ञान का वर मांगा। नचिकेता स्वयं स्वर्गकामी नहीं था। वह तो मानवहित के लिए चिन्तित था क्योंकि जब यमराज ने उसे धन, सम्पत्ति और चिरायु का प्रलोभन दिया तो भी नचिकेता ने उसे स्वीकार नहीं किया। नचिकेता जानता था कि ये सब सुख क्षणभंगुर हैं। इन्द्रियां जितना–जितना भोगों में रत रहती हैं उतना ही उनके तेज का ह्यास होता जाता है तथा उससे क्रमषः आत्मबल का भी नाष होता जाता है। अतः निचकेता यमाचार्य से प्रार्थना करता हुआ यही निवेदन करता है कि प्रभो! हमें किसी भी पदार्थ की आवष्यकता नहीं है। आप हमको आत्मज्ञान का ही उपदेष दीजिए।

इस प्रकार यमराज ने नचिकेता की आत्मज्ञान विशयक उत्कट इच्छा को जाना तब उसे आत्मज्ञान का अधिकारी मानकर उसे वह ज्ञान दिया। कठोपनिशद् में वर्णित यह आत्मज्ञान लोककल्याण की दृश्टि से वर्तमान काल में अत्यन्त उपयोगी है। यदि सभी धन लालसा को त्यागकर सर्वजन हित के लिए नचिकेता के समान व्यवहार करें तभी समाज में विद्यमान दुर्गुण दुराचार, भ्रश्टाचार आतंकवाद समाप्त हो सकेगा। ईषोपनिशद् में वर्णित त्यागभावना भी वर्तमान युग के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है–

> ईषावास्यमिदं सर्व यत्किञ्चिद् जगत्यां जगत्।
> तेन त्यक्तेन भुज्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्। **(ईषोपनिशद्)**

अर्थात् जगत् में जो कुछ भी है वह सब परमात्मा का ही है अतः त्याग के द्वारा ही भोग करें किसी के धन पर ललचाएं नहीं।

वेदान्त का यह सिद्धान्त है कि यदि मानव सदैव ईष्वरार्पण बुद्धि से प्रत्येक कार्य करता है तब कार्य के प्रति अनासक्ति हो जाती है और वह सदा सुखी रहता है। इसलिए परमात्मा–समर्पण बुद्धि से कर्म करते हुए मनुश्य को 100 वर्श तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इसलिए ईषावास्योपनिशद् में कहा है–

> कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविशेच्छत समाः।
> एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (ईषोपनिशद्)

जीवन में षिश्टता, शीलता, उदारता के साथ–साथ सत्यता अत्यावष्यक है। मुण्डकोपनिशद् में कहा है– "सत्यमेव जयते नानृतम्"

वस्तुतः अन्य गुणों से तो लौकिक मान मर्यादा ही प्राप्त होती है परन्तु सत्यभाशण से अलौकिक समृद्धि भी प्राप्त होती है। सत्य को जानने वाला सत्यवक्ता ही सत्स्वरूप परमात्मा को जान सकता है। कुछ लोगों का मानना है कि वर्तमान परिवेष में तो मिथ्यावादी ही उन्नति कर रहे हैं और प्रत्येक क्षेत्र में सफल होते हैं। यह एक भ्रान्ति है क्योंकि ऐसी उन्नति व सफलता चिर–स्थायी नहीं होती। अतः सत्य का पालन ही श्रेयस्कर है इसी से समाज में व्यक्ति सुप्रतिश्ठित होता है। जो शान्ति एवं संतोश सत्य मार्ग के पालन से प्राप्त होता है वह किसी अन्य मार्ग से प्राप्त नहीं हो सकता।

इस प्रकार वेदान्त में नैतिक मूल्यों का भी विषेश रूप से उल्लेख किया गया है। जीव परमात्मा जगत् ईष्वर ये तो वेदान्त के मुख्य विशय हैं ही। 'जीव ब्रह्मैव नापरः' इस वाक्य के द्वारा प्रकट किया गया है। यदि मानव सभी प्राणियों में अपनी ही छवि देखे तो कोई भी किसी के भी विरूद्ध आचरण न करे।

निष्कर्शतः वेदान्त अत्यधिक व्यवहारिकदर्षन है जिसके द्वारा जगत् के कण–कण में एक ब्रह्मतत्व की सत्ता को स्वीकार करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह षिक्षा दी गई है। वेदान्त संसार के प्रत्येक जीव में ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करता है और विशय सुख को क्षणिक एवं भ्रान्ति मानकर अध्यात्मिक सुख को शाष्वत मानता है। वेदान्त मतानुसार सभी प्राणी शक्तिसम्पन्न हैं यही विचार जीव को उन्नति की ओर प्रेरित करते हैं। इस प्रकार वेदान्त की उपयोगिता तो सार्वकालिक ही है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. कठोपनिशद् – गीताप्रेस, गोरखपुर
2. ईषोपनिशद् – गीताप्रेस, गोरखपुर
3. शर्मा डॉ. राममूर्ति – अद्वैत वेदान्त (इतिहास तथा सिद्धान्त ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1987
4. शर्मा डॉ. राममूर्ति – वेदान्तसारः, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, तृतीय संस्करण, 1989